वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष :3 अंक : 281 गुरुवार 8 फरवरी 2024 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने केन्द्रीय गृह मंत्री से की शिष्टाचार भेंट

जयपुर. शाबाश इंडिया। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने बुधवार को नई दिल्ली में केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह से मुलाकात की। केन्द्रीय गृह मंत्री से मुख्यमंत्री की यह शिष्टाचार भेंट थी।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की लोकसभा अध्यक्ष, केन्द्रीय उद्योग मंत्री एवं रेल मंत्री से मुलाकात

प्रदेश में रेल सुविधाओं के विस्तार के लिए बजटीय प्रावधान में वृद्धि पर आभार जताया। प्रदेश में औद्योगिक विकास की संभावनाओं के बारे में हुई चर्चा...

जयपुर. शाबाश इंडिया। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने बुधवार को नई दिल्ली में लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला, केन्द्रीय उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल एवं रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव से मुलाकात की। मुख्यमंत्री शर्मा ने गोयल से मुलाकात के दौरान प्रदेश में औद्योगिक विकास से जुड़ी संभावनाओं के बारे में चर्चा की। रेल मंत्री से मुलाकात के दौरान मुख्यमंत्री ने केन्द्रीय अंतरिम बजट में राजस्थान में रेलवे सुविधाओं के विकास, आधुनिकीकरण, रेलवे लाइन दोहरीकरण, आरओबी, आरयूबी सहित विभिन्न कार्यों के लिए पिछले बजट की तुलना में करीब साढ़े बारह प्रतिशत बढ़ोतरी करते हुए 9714 करोड़ रुपए का प्रावधान करने के लिए उनका आभार प्रकट किया।

परीक्षा से न घबराएं, पेरेंट्स से शेयर करें परेशानी

जयपुर. कासं

राजस्थान राज्य बाल अधिकार संरक्षण आयोग की अध्यक्ष संगीता बेनीवाल ने कहा- आने वाले समय में 10वीं और 12वीं बोर्ड की परीक्षा होने वाली है। इस दौरान काफी बच्चे तनाव में आ जाते हैं। परीक्षा को लेकर बच्चों को तनाव बिल्कुल नहीं लेना चाहिए। किसी भी तरह की परेशानी हो, उसे अपने पेरेंट्स से शेयर करना चाहिए। पेरेंट्स के पास हर समस्या का समाधान होता है। अगर पेरेंट्स से किसी कारणवश परेशानी शेयर नहीं कर पा रहे हैं तो अपने बड़े भाई-बहन, टीचर के साथ भी समस्या पर बात कर सकते हैं, क्योंकि वो आपको सही गाइड कर सकते है। बुधवार को दुर्गापुरा (टोंक रोड) स्थित राजस्थान राज्य कृषि प्रबंध संस्थान के ऑडिटोरियम में परीक्षा पर्व वर्कशॉप हुआ। यह वर्कशॉप राजस्थान राज्य बाल अधिकार संरक्षण आयोग की ओर से कराया गया। स्टूडेंट्स में परीक्षा के दौरान होने वाले तनाव को देखते हुए इस तरह की पहल की गई। इसमें आयोग की अध्यक्ष संगीता बेनीवाल के साथ ही कई मोटिवेशनल स्पीकर भी शामिल हुए।

सीएस सुधांश पंत अचानक पहुंचे ग्रेटर नगर निगम ऑफिस

जयपुर. कासं

मुख्य सचिव सुधांश पंत बुधवार सुबह अचानक जयपुर ग्रेटर नगर निगम के ऑफिस पहुंचे। सीएस करीब 1 घंटे तक निगम मुख्यालय में रुके। इस दौरान उन्होंने विभिन्न शाखाओं में जाकर निरीक्षण किया। उन्होंने पत्रावलियों को देखा और अधिकारियों की उपस्थिति की जानकारी ली। इस दौरान उन्होंने पेंडेंसी को लेकर भी सवाल किए। पंत ने निगम अधिकारियों और कर्मचारियों का हाजिरी रजिस्टर भी देखा। मुख्य सचिव सुधांश पंत सुबह करीब 9.25 बजे ग्रेटर नगर निगम के मुख्यालय पहुंचे। इसके बाद उन्होंने निगम मुख्यालय में विभिन्न शाखाओं में जाकर निरीक्षण किया। सीएस ने कर्मचारियों की उपस्थिति के बारे में जानकारी ली और अधिकारियों-कर्मचारियों का हाजिरी रजिस्टर देखा। सीएस ने नदारद रहने वाले कर्मचारियों को लेकर साफ तौर पर सही व्यवस्था बनाए रखने के दिशा निर्देश दिए। उन्होंने पत्रावलियों को देखा और अधिकारियों की उपस्थिति की जानकारी लेने का साथ ही पेंडेंसी को लेकर भी सवाल किए। वहीं ई-फाइलिंग और निगम के कामकाज को सुविधाजनक बनाने के लिए दिशा-निर्देश दिए। इस दौरान आयुक्त रुक्मणी रियार भी मौजूद रहीं। आयुक्त से ऑनलाइन कामकाज की जानकारी लेने के साथ समय पर काम करने की बात कही।

उत्तराखंड सरकार को बधाई और राजस्थान में जल्द लागू होगा ''एक राष्ट्र एक कानून''...

जयपुर. शाबाश इंडिया

जयपुर कराष्ट्रीय सुरक्षा जागरण मंच, राजथान चैप्टर द्वारा ''एक देश-एक कानून'' विषय पर पाथेय भवन, मालवीय नगर में संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में फैन्स के मार्गदर्शक एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक के एग्जीक्यूटिव सदस्य तथा मुख्य वक्ताः इंद्रेश कुमार , मुख्य अतिथि उप मुख्यमंत्री डॉ प्रेम बेरवा, सर्वोच्च न्यायालय के अधिवक्ता प्रशांत चतुर्वेदी ने अपने अपने विचार रखे। मुख्य वक्ताः इंद्रेश कुमार ने अपने वक्तव्य में कहा कि देश के विकास के लिए समान नागरिक संहिता का अनिवार्यता है। समान नागरिक संहिता के बहुमुखी लाभ हैं: राष्ट्रीय एकता और धर्मनिरपेक्षता को बढ़ावा देती है: समान नागरिक संहिता सभी नागरिकों के बीच समानता की भावना पैदा करती है, भले ही उनका धर्म या समुदाय कुछ भी हो। इससे विभिन्न धर्मों और समुदायों के बीच आपसी समझ और सद्भावना बढ़ती है।कानूनी प्रणाली को सरल और युक्तिसंगत बनाती है: समान नागरिक संहिता विभिन्न पर्सनल लॉज की जटिलताओं और विरोधाभासों को दूर करती है।इससे कानूनी प्रणाली को समझना और लागू करना आसान हो जाता है। नागरिकों के अधिकारों की रक्षा करती है: समान नागरिक संहिता सभी नागरिकों को समान अधिकार और अवसर प्रदान करती है। इससे भेदभाव और अन्याय को कम करने में मदद मिलती है। मुख्य अतिथि , उप मुख्यमंत्री प्रेम चन्द बैरवा ने बताया कि समान नागरिक संहिता विभिन्न पर्सनल लॉज के अंतर्गत महिलाओं के साथ होने वाले भेदभाव और उत्पीड़न को दूर करके लैंगिक न्याय एवं समानता सुनिश्चित करेगी। यह विवाह, तलाक, उत्तराधिकार, गोद लेने, भरण-पोषण आदि मामलों में महिलाओं को समान अधिकार और दर्जा प्रदान करेगी। यह कानून एक धागा है और विभिन्न धर्म, जाति, लोग इसके फूल, जल्द राजस्थान में भी सभी को पिरोया जाएगा इस कानून में। डॉ एस एस अग्रवाल, अध्यक्ष फेन्स राजस्थान चैप्टर ने सभी उपस्थित अतिथियों एवं सभी गणमान्य लोगों का स्वागत किया । उन्होंने कहा कि समान नागरिक संहिता विभिन्न पर्सनल लॉज के अंतर्गत महिलाओं के साथ होने वाले भेदभाव और उत्पीड़न को दूर करके लैंगिक न्याय एवं समानता सुनिश्चित करेगी। यह विवाह, तलाक, उत्तराधिकार, गोद लेने, भरण-पोषण आदि मामलों में महिलाओं को समान अधिकार और दर्जा प्रदान करेगी। राष्ट्रीय कार्यकारिणी से राष्ट्रीय महासचिव जसबीर सिंह ने अपने उद्बोदन में कहा कि देश के 22 वें विधि आयोग ने 14 जून 2022 को यूसीसी पर सार्वजनिक और धार्मिक संगठनों के साथ विभिन्न पक्षों से 30 दिन के भीतर अपनी राय को कहा था, उसके बाद ये मुद्दा देशभर में चर्चा में आ गया है।

गुदड़ी मंसूर खां जैन मन्दिर में मनाया प्रभु का जन्मकल्याणक महोत्सव

आगरा. शाबाश इंडिया

गुदड़ी मंसूर खां स्थित सेठ बिहारीलाल जैन धर्मशाला के मूलनायक चमत्कारी श्री 1008 शीतलनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर में 07 फरवरी को 10वें तीर्थंकर श्री 1008 भगवान शीतलनाथ का जन्म-तप कल्याणक महोत्सव बडे.ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। महोत्सव का शुभारंभ भक्तों ने सर्वप्रथम श्रीजी का अभिषेक एवं वृहद शांतिधारा के साथ किया। इसके बाद भक्तों ने विधानाचार्य रविन्द्र जैन शास्त्री एवं पंडित सौरभ जैन शास्त्री जी के कुशल निर्देशन में मंत्रोच्चारण के साथ श्रीजी के समक्ष मण्डल पर श्रीफल अर्पित कर श्री शीतलनाथ महामण्डल विधान की मांगलिक क्रियाएं सम्पन्न कीं।विधान में मौजूद सभी भक्तों ने संगीतकार के मधुर भजनों पर सुन्दर नृत्य किया। इस दौरान भक्तों का उत्साह देखते ही बन रहा था। इस अवसर पर सुभाष जैन,वीरेन्द्र कुमार जैन,देवेन्द्र जैन,राजेन्द्र कुमार जैन, राकेश जैन, नरेश जैन,राकेश जैन पार्षद,रविन्द्र कुमार जैन,मीडिया प्रभारी शुभम जैन समस्त सकल जैन समाज आगरा के लोग बड़ी संख्या में मौजूद रहे। रिपोर्ट मीडिया प्रभारी शुभम जैन

तीर्थंकर ऋषभदेव निर्वाणोत्सव 8 फरवरी 2024 पर विशेष

संस्कृति और सभ्यता के तीर्थंकर ऋषभदेव

श्री 1008 आदिनाथ भगवान, ज्ञान तीर्थ मुरैना

डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर

चैत्रकृष्ण नवमी को तीर्थंकर प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव (आदिनाथ) का जन्म हुआ था। राजा नाभिराय और उनकी पत्नी रानी मरूदेवी से चैत्रकृष्ण नवमी के दिन मति, श्रुत और अवधिज्ञान के धारक पुत्र का जन्म अयोध्या में राजघराने में हुआ था। इन्द्रों ने बालक का सुमेरू पर्वत पर अभिषेक महोत्सव करके 'ऋषभ' यह नाम रखा। जैन परम्परा में मान्य चौबीस तीर्थंकरों की श्रृखंला में भगवान ऋषभदेव का नाम प्रथम स्थान पर एवं अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी हैं। तीर्थंकर ऋषभदेव भारतीय संस्कृति के आद्य प्रणेता माने जाते हैं। वेदों, उपनिषदों और पुराणों में समागत उनके उल्लेख यह कहने के लिए पर्याप्त हैं कि ऐसे महापुरूष थे जिन्होंने मानव समुदाय को कृषि, लेखन, व्यापार, शिल्प, युद्ध और विद्या की शिक्षा दी। किसी भी व्यक्ति और समुदाय के लिए इन प्रकल्पों की शिक्षायें आगे बढ़ाने के लिए अनिवार्य होती हैं। विश्व के प्राचीनतम लिपिबद्ध धर्म ग्रंथों में से एक वेद में तथा श्रीमद्भागवत इत्यादि में आये भगवान ऋषभदेव के उल्लेख तथा विश्व की लगभग समस्त संस्कृतियों में ऋषभदेव की किसी न किसी रूप में उपस्थिति जैनधर्म की प्राचीनता और भगवान ऋषभदेव की सर्वमान्य स्थिति को व्यक्त करती है। नवीं शती के आचार्य जिनसेन के आदिपुराण में तीर्थकर ऋषभदेव के जीवन चरित्र का विस्तार से वर्णन है । भारतीय संस्कृति के इतिहास में ऋषभदेव ही एक ऐसे आराध्यदेव हैं जिसे वैदिक संस्कृति तथा श्रमण संस्कृति में समान महत्व प्राप्त है । यह गौरव की बात है कि इन्हीं प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के ज्येष्ठ पुत्र भरत के नाम से इस देश का नामकरण भारतवर्ष इन्हीं की प्रसिद्धि के कारण विख्यात हुआ। इतना ही नहीं, अपितु कुछ विद्वान भी संभवतः इस तथ्य से अपरिचित होंगे कि आर्यखण्ड रूप इस भारतवर्ष का एक प्राचीन नाम नाभिखण्ड अजनाभवर्ष भी इन्हीं ऋषभदेव के पिता नाभिराय के नाम से प्रसिद्ध था। जैनधर्म के प्रवर्तक प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव इस विश्व के लिए उज्जवल प्रकाश हैं। उन्होंने कर्मों पर विजय प्राप्त कर दुनिया को त्याग का मार्ग बताया। भगवान ऋषभदेव की शिक्षाएं मानवता के कल्याण के लिए हैं, उनके उपदेश आज भी समाज के विघटन, शोषण, साम्प्रदायिक विद्वेष एवं पर्यावरण प्रदूषण को रोकने में सक्षम एवं प्रासंगिक हैं। भारतीय संस्कृति के प्रणेता एवं जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव की जनकल्याणकारी शिक्षा द्वारा प्रतिपादित जीवन-शैली, आज के चुनौती भरे माहौल में उनके सामाजिक एवं राजनीतिक विचारों की प्रासंगिकता है। सामाजिक संरचना में उन्होंने प्रजाजनों को श्रेणियों में विभाजित करते हुए उनको अपने- अपने कर्तव्य अधिकार तथा उपलब्धियों के बारे में प्रथम मार्गदर्शन किया। सर्वांगीण विकास के मूल आधारभूत तत्वों का विवेचन कर वास्तविक समाजवादी व्यवस्था का बोध कराया। प्रत्येक वर्ण व्यवस्था में पूर्ण सामंजस्य निर्मित करने हेतु तथा उनके निर्वाह के लिए आवश्यक मार्गदर्शक सिद्धांत, प्रतिपादन करते हुए स्वयं उसका प्रयोग या निर्माण करके प्रात्याक्षिक भी किया। अश्व परीक्षा, आयुध निर्माण, रत्न परीक्षा, पशु पालन आदि बहत्तर कलाओं का ज्ञान प्रदर्शित किया । उनके द्वारा प्रदत्त शिक्षाओं का वर्गीकरण कुछ इस प्रकार से किया जा सकता है- 1.असि-शस्त्र विद्या, 2. मसि-पशुपालन, 3. कृषि- खेती, वृक्ष, लता वेली, आयुर्वेद, 4.विद्या- पढना, लिखना, 5. वाणिज्य- व्यापार, वाणिज्य, 6.शिल्प- सभी प्रकार के कलाकारी कार्य। जैन परंपरा के अनुसार तीर्थंकर ऋषभदेव ने कृषि का सूत्रपात किया। अनेकानेक शिल्पों की अवधारणा की। कृषि और उद्योग में अद्भुत सामंजस्य स्थापित किया कि धरती पर स्वर्ग उतर आया। कर्मयोग की वह रसधारा बही कि उजड़ते और वीरान होते जन जीवन में सब ओर नव बंसत खिल उठा। जनता ने अपना स्वामी उन्हें माना और धीरे-धीरे बदलते हुए समय के अनुसार वर्ण व्यवस्था, दण्ड व्यवस्था, विवाह आदि सामाजिक व्यवस्था का निर्माण हुआ। ऋषभदेव ने महिला साक्षरता तथा स्त्री समानता पर भी महत्वपूर्ण कार्य किया है। अपनी दोनों पुत्रियों को ब्राह्मी को अक्षर ज्ञान के साथ साथ व्याकरण, छंद, अलंकार, रूपक, उपमा आदि के साथ स्त्रियोचित अनेक गुणों के ज्ञान से अलंकृत किया ।लिपि विद्या को ऋषभदेव ने विशेष रूप से ब्राह्मी को सिखाया। इसी के आधार पर उस लिपि का नाम ब्राह्मी लिपी पड़ गया। ब्राह्मी लिपी विश्व की आद्य लिपी है। दूसरी पुत्री सुंदरी को अंकगणतीय ज्ञान से पुरस्कृत किया। आज भी उनके द्वार निर्मित व्याकरणशास्त्र तथा गणितिय सिद्धांतो ने महानतम ग्रंथों में स्थान प्राप्त किया है। आज जब भारत सरकार बेटी पढ़ाओ, बेटी बढ़ाओ का अभियान चला रही है, ऐसी में ऋषभदेव द्वारा अपनी पुत्रियों को दी गयी शिक्षा और अधिक प्रासंगिक हो जाती है। उनके द्वारा दी गयी बेटियों के शिक्षा संदेश को यदि अमल में लाया जाय तो इस अभियान में क्रांतिकारी परिवर्तन देखने को मिलेगे।

आर्यिका विन्ध्य श्री माताजी ससंघ का मंगल विहार कटिहार की ओर..

कटिहार. शाबाश इंडिया। गणाचार्य आचार्य श्री विराग सागर जी महाराज की आज्ञानुवर्ती शिष्या प.पूज्य गणिनी गुरुमाँ 105 विन्ध्य श्री माताजी ससंघ का मंगल विहार मुर्शिदाबाद पश्चिम बंगाल से होते हुए कटिहार (बिहार) की ओर हो रहा है, जहा नव निर्मित जिनालय का 10 मार्च से 15 मार्च 2024 तक श्री श्री 1008 आदिनाथ जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महा महोत्सव आर्यिका विन्ध्य श्री माताजी ससंघ के पावन सानिध्य में कटिहार में होना है : संजय बड़जात्या।

श्री शीतलनाथ भगवान का जन्म, तप कल्याणक महोत्सव धूमधाम से मनाया गया

वंडर सीमेंट परिसर तक प्रभु की विशाल रथयात्रा निकाली गई

मनोज सोनी. शाबाश इंडिया

निंबाहेड़ा। नगर में बुधवार को श्री शांतिनाथ चेत्यालय में भगवान शीतलनाथ के जन्म तप कल्याणक कार्यक्रम के तहत विशेष अनुष्ठान के साथ श्रद्धालुओं ने वंडर सीमेंट आर.के. मार्बल समूह की ओर से दिगंबर जैन समाज के तत्वाधान में आदिनाथ श्रीजी की विशाल रथयात्रा निकाली। समाज के प्रवक्ता मनोज सोनी के अनुसार प.पू. आचार्य श्री विद्यासागर जी महामुनिराज के आज्ञानुवर्ती शिष्य प.पू. मुनिश्री विमलसागर जी , प.पू. मुनिश्री अनंतसागर जी , प.पू. मुनिश्री धर्मसागर जी एवं प.पू. मुनिश्री भावसागर जी के सानिध्य में बुधवार को श्री शांति नाथ चेत्यालय में आयोजित धर्मसभा में समाज अध्यक्ष सुशील पाटनी एवम् महामंत्री मनोज पटवारी की अगुवाई में भगवान शीतलनाथ जी के जन्म तप कल्याणक के तहत अनुष्ठान पूजा समाज जनों द्वारा संपन्न की गई। इधर पंचकल्याणक महोत्सव अंतर्गत 6 फरवरी रात्रि में श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर परिसर में सकल जैन श्री संघ की महिलाओ की चौबीसी गान के बाद भजन संध्या का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में पंच कल्याणक महोत्सव के चयनित पात्रों का सम्मान किया गया । इधर बुधवार दोपहर भगवान आदि प्रभु की विशाल रथ यात्रा निकाली गई जो श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर आदर्श कॉलोनी से प्रारंभ होकर नगर के मुख्य मार्गो से होती हुई वंडर सीमेंट प्लांट प्रांगण में पहुंची, जुलूस में मुनि वृंदो का पद विहार का भी सानिध्य मिला। श्रद्धालुओं ने विविध स्थलो पर मुनि वृंदो के पाद प्रक्षालन कर श्री जी विराजित रथ की पूजा अर्चना की। बाद में रथ यात्रा जुलूस वंडर सीमेंट फैक्ट्री प्रांगण में पहुंचा जहां आर.के. मार्बल वंडर समूह के अशोक पाटनी, विमल पाटनी, विनीत पाटनी, श्रीमति सुशीला पाटनी, श्रीमति शांता पाटनी,श्रीमति तारिका पाटनी, परमानंद पाटीदार, यूनिट हेड नितिन जैन, सीएसआर हेमेंद्र सिंह झाला, राहुल व्यास सहित संस्थान के अधिकारी कर्मचारी गणों ने मुख्य द्वार पर मुनि वृंदो के पद प्रक्षालन कर गुरु भक्ति के साथ श्री जी की भव्य अगवानी कर आत्मीय अभिनंदन कर गुरुवार को आयोजित होने वाले एकदिवसीय भगवान आदिनाथ भक्तामर विधान पूजा अनुष्ठान का धार्मिक कार्य प्रारंभ किया।

वेद ज्ञान

प्रशंसा निस्वार्थ होती है

जीवन को सुंदर से सुंदरतम बनाने और ऊंचे से ऊंचा उठाने में लीक से हटना पड़ता है। प्रतिकूल परिस्थितियों में अपना धैर्य बनाकर रखने में पग-पग पर अग्नि परीक्षा देनी पड़ती है। समय की आंच में देर तक पकने के बाद अलग प्रकार की चमक आती है। बीच में थक जाने वाले लक्ष्य की ओर नहीं बढ़ पाते। संकट और दुख, नीर-क्षीर विवेक प्रदान करके जूझने का सामर्थ्य प्रदान करते हैं। आशा की एक किरण शेष रहने पर भी हमें निराशा पर विजय मिलती है। संसार में जितने भी महान व्यक्तित्व हुए हैं, अपार कष्ट सहने के बाद ही समाज में प्रतिष्ठित हुए हैं। पूर्ण तन्मयता से कार्य करने का अवसर तलाशने वाले एक दिन अपने लक्ष्य तक अवश्य पहुंचते हैं। सम्यक अवसर पाए बिना योग्यता और क्षमता का सदुपयोग नहीं हो पाता। सर्वोच्च उपलब्धि प्रदान करने के लिए समय किसी को अत्यंत लघु कार्य में नहीं उलझाता। धैर्य रखने वाले कल्पना से अधिक पाकर समाज में प्रेरणास्त्रोत बनते हैं। अपना कुछ भी न लुटाने वाले प्रशंसा की माला से सरल व्यक्ति को छलते हैं। उनके पास जो कुछ देने के योग्य रहता है, उसे छिपाकर किसी एक को चुपके से थमाते हैं। केवल प्रशंसा किसी का पेट नहीं भरती और न ही आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। प्रशंसा करने वाले के मुख पर चमक कुछ देने और असीम त्याग से आती है। शब्द की प्रशंसा से बड़ी भूख मिटाने की छटपटाहट होती है। कभी गले न लगाने वाले दूर से ही प्रशंसा की नाव चलाते हैं। खानापूर्ति के लिए की गई प्रशंसा विपरीत प्रभाव डालती है। आशीर्वाद पाने के लिए कलाकार प्रशंसा करते हैं। प्रशंसा करना एक साधना है। प्रशंसा करने में निर्मल हृदय की आवश्यकता होती है। इतिहास रचने वाले भीड़ से अलग रहते हैं। ऊंचाई पर स्थान रिक्त रहता है। मुक्त प्रशंसा करने वालों की वाणी पर सरस्वती का वास रहता है। प्रशंसा और चापलूसी ये दो शब्द हैं जिनके अर्थ भी अलग-अलग हैं। चापलूसी में स्वार्थ का भाव रहता है। किसी दूसरे शख्स से अपनी स्वार्थपूर्ति की कामना रहती है।

संपादकीय

मजबूरियां और पाला बदलने की सियासत

कुछ तो मजबूरियां रही होंगी, यूं कोई बेवफा नहीं होता। मशहूर शायर बशीर बद्र का यह शेर देश की राजनीति में हुए हालिया बदलाव पर एकदम सही बैठता है। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने एक बार फिर पाला बदल कर यह बात सिद्ध कर दी है कि या तो 'इंडिया' गठबंधन ने उन्हें गंभीरता से नहीं लिया या 'एनडीए' गठबंधन ने उन्हें कुछ ज्यादा ही गंभीरता से ले लिया। राजनीतिक गलियारों में इस बात को लेकर अटकलें लग रहीं हैं

कि नीतीश के इस कदम के पीछे का कारण क्या हो सकता है। बिहार में जो कुछ भी हुआ उसके पीछे के कारणों में जहां एक ओर 'इंडिया' गठबंधन में न होने वाले समझौते हैं। वहीं दूसरी ओर विपक्षी दलों के 'इंडिया' गठबंधन के कुछ नेताओं में किसी-न-किसी तरह का खौफ भी है। उन नेताओं को लगता है कि उन्हें बेवजह किसी-न-किसी विवाद में फंसा दिया जाएगा और इसका लाभ सत्तापक्ष आने वाले चुनाव में लेगा, परंतु नीतीश कुमार की बात करें तो जिस तरह उन्होंने विपक्षी दलों को जोड़ने में पहल की थी, उनसे ऐसी उम्मीद किसी को भी नहीं थी, परंतु यहां एक बात अहम है कि नीतीश जैसे अनुभवी और कद्दावर नेता ने जो 'इंडिया' गठबंधन के साथ किया उसके पीछे कोई ठोस वजह जरूर रही होगी। जैसा कि हमने इस कॉलम में कुछ हफ्तों पहले लिखा था कि मोदी सरकार में किसी भी तरह की अटकलों की कोई जगह नहीं है। प्रधानमंत्री के मन में जो होता है वे उसे हर संभव कोशिश के सहारे पूरा कर ही लेते हैं। इस बात का सबसे बड़ा उदाहरण अयोध्या में श्री राम मन्दिर का निर्माण और उद्घाटन है। इसलिए यदि विपक्षी दल नीतीश के पाला बदलने को लेकर जो अटकलें लगा रहे हैं हो सकता है वह सही न हों। क्या पता प्रधानमंत्री जी ने नीतीश कुमार के लिए कुछ बड़ा सोच रखा हो जिसका पता केवल अमित शाह जी को और शायद नीतीश जी को ही हो, तभी तो उन्होंने यह कदम उठाया। रही बात अटकलों की तो एक बात जो सत्ता और मीडिया के गलियारों में घूम रही है वो यह है कि शायद प्रधानमंत्री ने नीतीश कुमार को देश का अगला उपराष्ट्रपति बनाना तय किया है, परंतु ऐसा संभव इसलिए नहीं लगता क्योंकि मौजूदा उपराष्ट्रपति जगदीप धनकड़ जी का कार्यकाल अभी अगस्त 2022 में ही शुरू हुआ है, जो कि 2027 तक चलेगा। ऐसे में समय से पहले उन्हें अपना पद छोड़ना पड़ा तो उसके पीछे कोई ठोस वजह होनी चाहिए। परंतु वहीं एक खबर और है जो काफी जोरों से सियासी गलियारों में घूम रही है, कि नीतीश कुमार 2024 में बनने वाली मोदी सरकार में लोक सभा के अध्यक्ष बनाए जाएंगे। इस पूर्वानुमान को इसलिए सही माना जा सकता है क्योंकि 2024 में बनने वाली सरकार में लोक सभा अध्यक्ष बिना किसी मौजूदा पद पर तैनात व्यक्ति का कार्यकाल कम किए हुए नियुक्त किया जाएगा। देखा जाए तो लोक सभा अध्यक्ष का पद भी राज्य सभा अध्यक्ष के पद की तरह एक संवैधानिक पद होता है।

-राकेश जैन गोदिका

परिदृश्य

साफ-सुथरी छवि

मुख्यमंत्री रहते ही कपूरी ठाकुर ने सीबीआई को लिखा था कि बिहार सीमा में किसी भी गंभीर मामले की जानकारी मिले तो वह गोपनीय ढंग से जांच शुरू कर दे। राज्य सरकार की अनुमति आवश्यक नहीं होगी। यह आदेश 1996 तक प्रभावी रहा। जबकि आज कई मुख्यमंत्री गंभीर आरोपों से घिरे हैं। कहीं उनके स्वजन हैं। पूर्व सीएम-पूर्व डिप्टी सीएम हैं। इनका निर्देश है, सीबीआई बिना अनुमति उनके राज्यों में न घुसे। गुजरे दो माह की खबरों पर उड़ती नजर डालें। एक सांसद के घर से आयकर छापे में 314 करोड़ नकद बरामद। इंटर टॉपर घोटाले के सूत्रधार (बिहार) के यहां छापे में तीन करोड़ कैश मिले। जमीन से जुड़े 100 दस्तावेज भी। एक सचिवालय (राजस्थान) में पोस्टेड वित्तीय सलाहकार ने दो दिनों में 26 फ्लैट खरीदे। इसी समय महादेव ऐप (छत्तीसगढ़) प्रकरण के और तथ्य आए। पांच हजार करोड़ का मनी लॉड्रिंग। दुबई की एक शादी में 200 करोड़ खर्च। एक दूसरे राज्य (झारखंड) में मनरेगा लूट, जमीन धांधली, खनन घोटाला, टेंडर लूट, बालू धांधली, शराब घोटाले, यानी जहां सरकारी काम, वहीं लूट नहीं, सार्वजनिक डकैती। और तो और घोटाले से सेना तक की जमीन बेचने का दुस्साहस। ऐसे में कपूरी ठाकुर का सम्मान, सार्वजनिक जीवन में ईमानदारी, प्रामाणिकता, शुचिता, मर्यादा का अभिनंदन है। उस राजनीतिक संस्कृति का यशोगान है, जिसमें शब्द-कर्म में एका थी। साधन-साध्य में फर्क नहीं था। कथनी-करनी एक होते थे। कपूरी जी का एक अन्य प्रसंग देखें। पार्टी ने अंतिम क्षणों तक (1985) एक सीट (समस्तीपुर) का प्रत्याशी गोपनीय रखा। अंतिम बैठक में कपूरी जी ने रामजी बाबू (मंत्री रहे) से पूछा, समस्तीपुर के हर घर में हमने पानी पिया है। खाना खाया है। कौन आदमी है, जिन्हें मैं नहीं जानता? आप नाम बताएं। पार्टी नेताओं ने चुपचाप रामनाथ ठाकुर का नाम तय कर रखा था। सुनते ही कपूरी ठाकुर ने नेताओं से पूछा कि क्या ''इंदिरा जी का वंशवाद खराब और कपूरी ठाकुर का ठीक? यह कैसे सही है?'' साथी निरुत्तर। कपूरी जी ने कहा, ''विधानसभा घर की पंचायत नहीं है कि पिता-पुत्र साथ बैठकर फैसला करेंगे। यह लोक रहनुमाओं का मंच है। इसकी गरिमा-सम्मान रखिए। वह चुनाव लड़ेंगे तो मैं नहीं लड़ूंगा।'' महावीर त्यागी ने लिखा है, खद्दर की पैबंद लगी गंजी पहनते थे सरदार पटेल। उनकी बेटी मणिबेन उनके कुर्ते पर पैबंद सिलती थीं। एक भारी जनसभा में सरदार ने कहा, ''मैंने फैसला किया था यदि पब्लिक लाइफ में काम करना हो, तो अपनी मिल्कियत नहीं रखनी चाहिए। तब से आज तक मैंने अपनी कोई चीज नहीं रखी। न कोई मेरा बैंक अकाउंट है, न जमीन है और न ही अपना मकान है''। ऐसे ही नेताओं के तप-त्याग-चरित्र से भारत फला-फूला है। इतिहास का प्रसंग है। मेगस्थनीज चाणक्य से मिलने आए। देखा, काम में व्यस्त हैं। वहां जल रहा दीपक बुझाते हैं। दूसरा जलाते हैं, फिर मेगस्थनीज से संवाद करते हैं। मेगस्थनीज की जिज्ञासा है, एक दीपक बुझाकर, दूसरा क्यों जलाया आपने? चाणक्य का सहज जवाब था, अब तक महामंत्री की हैसियत से राष्ट्र का काम कर रहा था, अब चाणक्य की हैसियत से आपसे बात कर रहा हूं। उस दीपक में राष्ट्र का तेल है। निजी कार्य के लिए राष्ट्रीय सम्पति का उपयोग घोर अपराध है।

तीर्थंकर पूज्य ऋषभदेव जी मोक्षकल्यानक के पावन अवसर पर, स्वावलंबन देने वाले...

इंजिनियर अरुण कुमार जैन

आदिप्रभु आदितीर्थंकर, सृष्टि पूज्य भगवान.
नाभि,मरुदेवी सुत प्यारे, कोटि कोटि प्रणाम.
मनु,अज,नाभि कुलसंवाहक,
आदि ब्रम्हा महान.
चैत्र कृष्ण नवमी को जन्मे,
नगर अयोध्या धाम.
असि,मसि,कृषि, श्रुत के परिचायक,अंक, शिल्प दे ज्ञान.
स्वावलंबन सिखलाने वाले,
कोटि कोटि प्रणाम.
नंदा,सुनंदा पत्नी आपकी,
एक सौ दो संतान.
भरत, बाहुबली, ब्राम्ही, सुंदरी,
आदि अनेकों नाम.
आर्यावर्त के थे अधिपति,
किया भारतवर्ष महान,
स्वावलंबन सिखलाने वाले,
युग नायक कोटि प्रणाम.
पुत्रों को दे राजपाट,
आर्यावर्त बनाया,
भरत श्रेष्ठ के नाम से फिर ये,
भारतवर्ष कहाया.
कड़ी तपस्या के प्रवर्तक, कैलाश गिरि निर्वाण.
प्रथम तीर्थंकर इस वसुधा के,
कोटि - कोटि प्रणाम.
माघकृष्ण चतुर्दशी को,
मोक्षमहल पधारे,
श्रेष्ठकर्म से ही सुख सच्चा,
दिव्य ध्वनि विस्तारे.
ऋषभदेव से वर्धमान तक,
यही ज्ञान विज्ञान.
निर्वाणदिवस पर इस वसुधा के
कोटि कोटि प्रणाम.
आदि प्रभु, आदि तीर्थंकर, सृष्टि पूज्य भगवान,
निर्वाण महोत्सव आज मना,
करते हमसब गुणगान.

#अमृता हॉस्पिटल फरीदाबाद,
मो 7999469175

भगवान आदिनाथ स्वामी के निर्वाण उत्सव पर आज होगी शान्ति धारा

निर्वाण कल्याणक पर चढ़ेगा लाड्डू, नगर के मन्दिरों में होगा पूजा पाठ

अशोक नगर. शाबाश इंडिया

मध्य भारत के सबसे बड़े तीर्थ अतिशय क्षेत्र दर्शनोंदय तीर्थ थूवोनजी में संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के शिष्य आचार्य श्री आर्जवसागरजी महाराज ससंघ के सान्निध्य में थूवोनजी के मूल नायक भगवान श्री आदिनाथ स्वामी के निर्वाण कल्याणक पर इक्कीस किलो का स्वेत शुद्ध शकर से निर्मित लाडू गुरु वार मंडल के संयोजक में दर्शनोदय तीर्थ थूवोनजी कमेटी के तत्वावधान में भक्तों द्वारा समर्पित किया जायेगा।

युग के आदि में अषि मषि कृषि का दिया था सन्देश : विजय धुर्रा

मध्यप्रदेश महासभा संयोजक विजय धुर्रा ने बताया कि युग के आदि में अषि मषि कृषि विद्या वाणिज्य और शिल्प का उपदेश देकर व्याकुल मानवता में एक नया शक्ति संचार करने वाले शिव शाक्ति मानव समाज को जीवन जीने की राह दिखाने वाले भगवान रिषभ देव जिन्हें जगत आदिनाथ स्वामी के रूप में जानता है ऐसे प्रभु के निर्वाण कल्याणक पर आज दिनांक 8 फरवरी 2024 को दर्शनोदय तीर्थ थूवोनजी में भगवान की महा आराधना मंगलाष्टक के साथ होगी जहां प्रभु का एक सौ आठ रिद्धिसिद्धि देने वाले रिद्धि मंत्रों से महाभिषेकहोगा इसी के साथ जगत कल्याण की कामना के लिए महा शान्ति धारा के साथ ही लाडू समर्पित किया जायेगा इसके बाद भगवान की महा आराधना की जायेगी।

आज प्रातः काल होगा आचार्य श्री ससंघ का थूवोनजी आगमन

दर्शनोदय तीर्थ थूवोनजी कमेटी के महामंत्री विपिन सिंघई ने बताया कि संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के शिष्य आचार्यश्रीआर्जवसागर जी महाराज ससंघ मुनि श्री भाग्य सागरजी महाराज, मुनिश्री महत सागर जी महाराज, मुनिश्री सजगसागर जी महाराज, मुनिश्री सानंद सागर जी महाराज ससंघ का दोपहर बाद चन्देरी से अतिशय क्षेत्र दर्शनोंदय तीर्थ थूवोनजी के लिए मंगल विहार हो गया मुनि संघ का रात्रि विश्राम तगारी में हो रहा है आज प्रातः काल में मुनि संघ तगारी से विहार कर

दर्शनोदय तीर्थ थूवोनजी पधारेंगे ।

त्रिकाल चौबीस में होगी अड़तालीस दीपों से आरती

इधर नगर के सभी मन्दिरों में विशेष पूजा पाठ के साथ निर्वाण लाडू समर्पित किया जायेगा वहीं शान्ति नगर त्रिकाल चौबीस जिनालय में शाम 7:30 बजे से संगीत में भक्तांबर पाठ 48 दीप प्रज्वलित करते हुए संत शिरोमणि आचार्य भगवंत गुरुवर विद्यासागर महा मुनिराज के उत्तम स्वास्थ्य लाभ की कामना सामूहिक रूप से की जायेगी। इस हेतु कमेटी के अध्यक्ष अशोक जैन टींगू मिल, महामंत्री विपिन सिंघई, अशोक नगर समाज के अध्यक्ष राकेश कासंल महामंत्री राकेश अमरोद ,मध्यप्रदेश महासभा संयोजक विजय धुर्रा ,थूवोनजी कमेटी के मंत्री विनोद मोदी, राजेन्द्र हलवाई , कोषाध्यक्ष सौरव वाझल, आडिटर राजीव चन्देरी, मीडिया प्रभारी अरविंद कचंनार, शैलेन्द्र दददा, गंज मन्दिर संयोजक उमेश सिघई, मनीष सिघई, श्रेयांस घेला, मनोज भैसरवास सुरेश कुमार, मुन्ना वाझल सभी ने एक वैठक कर थूवोनजी के कार्यक्रम को अंतिम रूप दिया।

सीकर के ग्राम खूड़ के अतिप्राचीनतम आदिनाथ जैन मंदिर में होगा शनिवार से दो दिवसीय भव्य वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन

सीकर. शाबाश इंडिया

शेखावाटी क्षेत्र के अतिप्राचीन एवं अतिशयकारी जिनालयों में से एक ग्राम खूड़ के भव्य जिनालय में विराजित देवाधिदेव श्री 1008 आदिनाथ भगवान के अतिशय से शनिवार से भव्य वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव का दो दिवसीय आयोजन बडे.ही उत्साह एवं धर्म प्रभावना के साथ होने जा रहा है। मीडिया प्रभारी विवेक पाटोदी ने बताया कि वेदी प्रतिष्ठा की सभी मांगलिक क्रियाएं ब्रम्हचारिणी करुणा दीदी व दीपा दीदी के सानिध्य में प्रतिष्ठाचार्य पंडित सनत कुमार शास्त्री जयपुर एवं सहयोगी प्रतिष्ठाचार्य पंडित

आशीष जैन शास्त्री सीकर के निर्देशन में सम्पन्न होने जा रहा है। महोत्सव के अध्यक्ष डा.विनोद सेठी व कार्याध्यक्ष भागचंद सेठी ने बताया कि शनिवार को कार्यक्रम के प्रारंभ में प्रातः अभिषेक एवं शांतिधारा, देवाज्ञा, गुरुआज्ञा, आचार्य निमंत्रण, ध्वजारोहण सकलीकरण, इन्द्रप्रतिष्ठा, मण्डप शुद्धी, जाप्यानुष्ठान नांदी विधान, घटयात्रा, नूतन वेदी शुद्धी संस्कार विधी (अष्ट कुमारियों द्वारा) होगी । दोपहर यागमण्डल विधान व सायंकाल महाआरती होगी , जिसके पश्चात दीदी के प्रवचन व सांस्कृतिक कार्यक्रम होंगे मीडिया प्रभारी विवेक पाटोदी ने बताया कि इस पावन अवसर पर सीकर व आसपास के क्षेत्रों से जुड़े जैन धर्मावलंबी सहित देश के विभिन्न स्थानों से खूड़ से जुड़े समाज के श्रद्धालु सम्मिलित होंगे।

युग प्रवर्तक भारतीय संस्कृति के अन्वेषक एवं जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ भगवान का मोक्ष कल्याणक दिवस आजः माघ कृष्ण चतुर्दशी

1) आदिनाथ द्वारा मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति प्रणाली का जन साधारण को ज्ञान।
2) अपनी सुपुत्रियों के माध्यम से लिपि एवं अंक ज्ञान।
3) इस देश का नाम भारत - आदिनाथ के जेष्ठ पुत्र भरत के नाम पर।
4) नियमों एवं व्यवस्थित जीवन यापन का ज्ञान।
5) शाश्वत तीर्थक्षेत्र अयोध्या में जन्म।

वर्तमान में इस जंबूद्वीप के भरत क्षेत्र में अवसर्पिणी काल का संचार हो रहा है। आदिनाथ भगवान इस काल के प्रथम तीर्थंकर है । इन्हे ऋषभनाथ भी कहा जाता है। तीर्थंकर आदिनाथ का जन्म जम्बूद्वीप भरतक्षेत्र की पावन नगरी अयोध्या की भूमि पर हुआ था। इस नगरी में ही द्वितीय तीर्थंकर अजीतनाथ जी, चतुर्थ सर्ग तीर्थंकर अभिनंदन जी, पंचम तीर्थंकर सुमतिनाथजी एवं चौहदवे तीर्थंकर अनंतनाथ भगवान का जन्म हुआ था एवं तीर्थंकरों के कुल उन्नीस कल्याणक हुए थे । जैन धर्म के अनुसार सम्मेद शिखर जी एवम् अयोध्या एक शाश्वत तीर्थ क्षेत्र है । अयोध्या में नव निर्मित मंदिर में भगवान राम की श्यामवर्ण प्रतिमा में प्राण प्रतिष्ठा के कारण अभी विशेष चर्चा में है । यह वही अयोध्या भूमि है जहाँ मयार्दा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम ने माता कौशल्या के गर्भ से जन्म लिया था। जैन धर्म में भगवान राम को श्लाका पुरुष माना गया है ।

आदिनाथ का जन्म चैत्र माह के कृष्ण पक्ष की नवमी तिथि को उत्तरषाढ़ा नक्षत्र में इश्वाकु वंश में हुआ था। जैन धर्म के अनुसार यह तृतीय काल था। आदिनाथ के पिता का नाम राजा नाभिराज था जो अयोध्या के राजा थे एवं माता का नाम मरूदेवी था। आदिनाथ का यशस्वती तथा सुनंदा के साथ विवाह हुआ था। यशस्वती से उन्हें 99 पुत्र (चक्रवर्ती राजा भरत सहित) तथा एक पुत्री ब्राह्मी हुए थे। सुनंदा से उन्हें एक पुत्र बाहुबली तथा एक पुत्री सुंदरी हुए थे। जीवन से विरक्ति होने पर स्वयं के मुनि बन जाने के बाद उन्होंने अपने जेष्ठ पुत्र भरत को अयोध्या का राजा घोषित कर दिया था और अन्य पुत्रों को दूसरे राज्य सुपुर्द कर दिए थे। कालांतर में भरत द्वारा समस्त भूमंडल पर विजय प्राप्त की एवं चक्रवर्ती कहलाए एवं निष्कंटक राज किया था । उन्ही के नाम पर इस देश का नाम भारत पड़ा है। आदिनाथ को युगद्दष्टा निर्माता के रूप में जाना जाता हैं। इनसे पहले मनुष्य कोई काम नही करते थे अर्थात पढ़ना-लिखना, खेती, व्यापार इत्यादि किसी भी चीज का प्रावधान नहीं था। उस समय मनुष्य की सभी आवश्यकताएं कल्पवृक्ष से पूरी हो जाया करती थी । कालांतर में कल्पवृक्ष की शक्तियां कम होती गयी।भोगभूमि की रचना मिट चुकी थी और कर्मभूमि की रचना प्रारंभ हो रही थी ।उस समय वर्षा होने से खेतों में अपने आप तरह-तरह के धान के अंकुर उत्पन्न होकर समय पर योग्य फल देने वाले हो गए थे ।इस प्रकार उस समय यद्यपि भोग उपयोग की

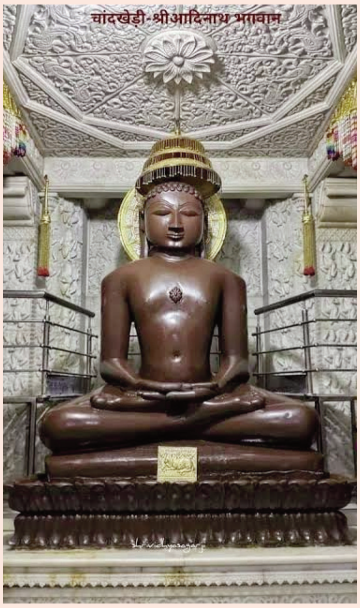

समस्त सामग्री उपलब्ध थी, परंतु प्रजा उसे काम में लाना नहीं जानती थी; इसलिए वह उसे देखकर भ्रम में पड़ गई थी। अब तक भोग भूमि बिल्कुल मिट चुकी थी और कर्म युग का प्रारंभ हो गया था पर लोग कर्म करना जानते नहीं थे इसलिए वे भूख प्यास से दुखी होने लगे । ऐसी अवस्था में राजा ऋषभदेव ने ही मनुष्य को आवश्यक ज्ञान दिया। उन्होंने मनुष्य को जीवन जीने के लिए छह आवश्यक काम सिखाये थे - असि- रक्षा करने के लिए अर्थात सैनिक कर्म
मसि- लिखने का कार्य अर्थात लेखन
कृषि- खेती करना और अन्न उगाना
विद्या- ज्ञान प्राप्त करने से संबंधित कर्म
वाणिज्य- व्यापार से संबंधित कार्य
शिल्प- मूर्तियों, नक्काशियों, भवनों इत्यादि का निर्माण। तात्पर्य यह है कि भगवान आदिनाथ ने ही लोगों को सुनियोजित तरीके से भवन निर्माण करना, नगर बसाना, खेती करके अन्न उगाना और उससे भोजन करना, शिक्षा प्राप्त करना और उससे समाज में नियमों की स्थापना करना, व्यापार करके उन्नति करना और धन कमाना, अपनी या अपने परिवार या देश की रक्षा करना तथा इन सभी को लिपिबद्ध करना इत्यादि सिखाया। राजा ऋषभ देव ने अपनी सुपुत्रियों ब्राह्मी को लिपि विद्या एवं सुंदरी को अंक विद्या का ज्ञान कराकर, इन विद्याओं को प्रसारित करवाया । इस तरह से मनुष्य को जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं को सिखाने का श्रेय ऋषभनाथ जी को जाता है। उन्होंने ही प्रथम बार अपनी नगरी अयोध्या में शासन-व्यवस्था, नियम-सिद्धांत, अधिकार-कर्तव्य इत्यादि की स्थापना की थी। इसके बाद सब कुछ नियमों के अनुसार चलने लगा था तथा धर्म की स्थापना हुई थी। राज व्यवस्था के दौरान एक बार स्वर्ग के राजा इंद्रदेव ऋषभनाथ की सभा में आये हुए थे। वे दोनों उस सभा में नृतकियों का नृत्य देख रहे थे, उसी समय नीलांजना नामक एक नृतकी की आयु पूरी हो गयी और उसकी मृत्यु हो गयी। यह देखकर भगवान आदिनाथ को मृत्यु के दुखद सत्य का ज्ञान हुआ। उन्होंने उसी समय सांसारिक मोह-माया, राजपाट इत्यादि त्याग कर सन्यासी बन जाने का निर्णय लिया। उन्होंने अपना राज्य अपने पुत्र भरत को सौंप दिया और बाकि के पुत्रों में राज्य का भाग सुपुर्द कर सिद्धार्थ नगर चले गए। वहां जाकर उन्होंने वस्त्रों का त्याग किया और दिगंबर अवस्था में आ गए। अब ऋषभनाथ पूरी तरह से मुनि बन चुके थे। भगवान आदिनाथ ने छः माह तक एक ही आसान पर बैठकर कठोर तप किया एवं छः माह तक विधि पूर्वक आहार न मिलने के कारण, बिना भोजन रहते हुए 12 माह से ऊपर हो गए थे। ऋषभदेव जी के त्याग को देखते हुए उनके साथ कई राजा व प्रजा के लोग भी आये थे जिन्होंने सन्यास ले लिया था। इसमें उनके पुत्र व प्रपोत्र भी थे। चूँकि वह पहले तीर्थंकर थे, इसलिए लोगों को यह नही पता था कि उन्हें आहार में क्या दे एवं किस विधि से दे, इसलिए वे उन्हें आभूषण, हीरे-मोती इत्यादि बहुमूल्य वस्तुएं दिया करते थे, ना कि भोजन। इससे उनके साथ के लोगों में व्याकुलता होने लगी और वे भूख-प्यास से बेहाल होने लगे। तब उनमे से कईयों ने जैन धर्म में से कई अन्य मतों/ संप्रदायों की शुरूआत की थी। एक दिन आदिनाथ भ्रमण करते हुए हस्तिनापुर पहुंचे जहाँ युवराज श्रेयांश ने उन्हें विधि पूर्वक इक्षुरस पीने को दिया। उन्होंने 1 वर्ष से अधिक समय के बाद कुछ ग्रहण किया था, एवं तपस्या के बाद आदिनाथ जी ने प्रथम आहार ग्रहण किया था इसलिए इस दिन का महत्व बढ़ गया। यह दिन वैशाख माह की शुक्ल तृतीया थी जिसे आज अक्षय तृतीया के रूप में मनाया जाता हैं। इसके पश्चात भगवान आदिनाथ ने लगभग एक हजार वर्षों तक कठोर तपस्या की । अंत में फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी को प्रयागराज के पुर्वतालपुर उद्यान में वटवृक्ष के नीचे उन्हें कैवल्य ज्ञान की प्राप्ति हुई ।कैवल्य ज्ञान का अर्थ भूत, वर्तमान व भविष्य के संपूर्ण ज्ञान प्राप्ति से है। इसके बाद इंद्र देव व अन्य देवताओं ने मिलकर भगवान आदिनाथ के उपदेश देने के लिए समवशरण की स्थापना की। इसमें वे देवी - देवताओं, मनुष्यों, मुनियों, आर्यिकाओं, तियंचो इत्यादि को धर्म का उपदेश दिया करते थे। कुबेर द्वारा समवशरण - सभा की रचना परिक्रमा रूप बारह सभाएं बनाई गई थी। समवशरण सभा में अतिशयपूर्ण दिव्य ध्वनि में धर्म -अधर्म का स्वरूप समझा कर सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र रत्नत्रय का; जीव, अजीव, आस्त्रव, बंध, संवर, निर्जरा और मोक्ष इन सात तत्व का; जीव, पुदगल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल इन छः द्रव्यों का, पुण्य - पाप का और लोक-अलोक का स्वरूप बतलाया । प्रवचन में संदेश दिया की जब तक प्राणियों की दृष्टि बाह्य भौतिक पदार्थों में उलझी रहेगी, तब तक आत्मीय आनंद का अनुभव नहीं हो सकता । उसे प्राप्त करने के लिए तो सभी तरह से मोह छोड़कर कठिन तपस्याएं करने की आवश्यकता है, इंद्रियों पर विजय प्राप्त करने की आवश्यकता है । आत्म ध्यान में अचल होने की आवश्यकता है। इंद्र की प्रार्थना पर अनेक देशों में विहार कर धर्मोपदेश किया । उस समय अखंड भारत वर्ष में जैन धर्म फैला हुआ था । मान्यता के अनुसार भगवान आदिनाथ के 84 गणधर, 84 हजार मुनि (साधू या जैन भिक्षु, पुरुष) तथा 3.5 लाख के आसपास साध्वियां (जैन भिक्षु, महिला) थी। केवल ज्ञान प्राप्ति के पश्चात आदिनाथ तीर्थंकर के रूप में 99 हजार वर्ष तक पृथ्वी पर रहे और धर्म का प्रचार-प्रसार किया। देश विदेश में भ्रमण करते रहे । जब उनकी मृत्यु के 14 दिन शेष रह गए थे तब वे अष्टापद - कैलाश पर्वत चले गए थे। वहां उन्होंने योग- निरोध किया एवं सब कुछ छोड़कर मेरु की तरह अचल होकर आत्मध्यान में लीन हो गए ।योग- निरोध के तेरह दिन पश्चात बहत्तर कर्म शत्रुओं का नाश कर उनके चौदहवे गुण स्थान में पहुंचते ही माघ मास की कृष्ण चतुर्दशी के दिन निर्वाण/ मोक्ष को प्राप्त कर संसार के आवागमन से मुक्त हो गए । इस दिन को जैन धर्म में भगवान आदिनाथ के निवार्णोत्सव या मोक्ष प्राप्ति के रूप में मनाया जाता है। उनके साथ ही उनके कई भक्तों/ मुनियों ने समाधि ले ली थी तथा मोक्ष को प्राप्त किया था। इसके पश्चात स्वयं इंद्र देव सभी देवताओं के साथ कैलाश पर्वत आये और भगवान आदिनाथ के शरीर (नख और बाल) का अंतिम संस्कार किया। कुछ वर्षों में तृतीय काल का अंत हो गया था तथा चतुर्थ काल शुरू हुआ था। हिंदू धर्म के कई ग्रंथों में ऋषभदेव या आदिनाथ जी के नाम का उल्लेख मिलता हैं। महापुराण में उन्हें भगवान विष्णु के 24 अवतारों में से एक अवतार बताया गया हैं। भागवतपुराण में भी लिखा गया है कि जैन धर्म के संस्थापक ऋषभ देव जी थे। उन्हें एक महान ऋषि व तपस्वी की संज्ञा दी गयी है। यहूदियों /मुसलमानों द्वारा बाबा आदम के रूप में जाना जाता है। बौद्ध साहित्य में आदिबुद्ध एवं धर्मावलंबियों द्वारा भी किसी अन्य नाम से जाना जाता है। आदिनाथ भगवान जन -जन के भगवान है, उद्धारक है। विश्व के सभी धर्मों का मूल उद्धव स्त्रोत्र तीर्थंकर आदिनाथ को माना जा सकता है। तीर्थंकर आदिनाथ मानव सभ्यता के जनक है। भगवान आदिनाथ के मोक्ष कल्याणक के अवसर पर हम विश्वधर्म के मार्ग पर चलकर विश्वशांति का मार्ग प्रशस्त कर सकते है। तीर्थंकर आदिनाथ ने प्रवृत्ति एवं निवृत्ति दोनों ही मार्ग का अनुसरण करवाया है। भारतीय संस्कृति के प्रणेता एवं जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव की जनकल्याणकारी शिक्षा एवं प्रतिपादित जीवन शैली आज के चुनौतीपूर्ण जीवन में प्रासंगिक है । उनका बताया गया मार्ग सामाजिक एवं राजनैतिक जीवन की गुणवत्ता बन सकता है ।

संकलनः भागचंद जैन मित्रपुरा
अध्यक्ष अखिल भारतीय जैन बैंकर्स फोरम, जयपुर

श्री दिगम्बर जैन भव्योंदय अतिशय क्षेत्र, रैवासा में 8 फरवरी को मनाया जाएगा देवाधिदेव 1008 श्री आदिनाथ भगवान का मोक्ष कल्याणक महोत्सव

विद्यासागर महाराज के स्वास्थ्य लाभ हेतु होगी विशेष आराधना

वी के पाटोदी. शाबाश इंडिया

सीकर ।संत शिरोमणी आचार्य 108 श्री विद्यासागर महाराज के धर्म प्रभावक शिष्य निर्यापक मुनि 108 श्री सुधासागर महाराज के मंगल आशीर्वाद से श्री दिगंबर जैन भव्योंदय अतिशय क्षेत्र रैवासा में देवाधिदेव 1008 श्री आदिनाथ भगवान का मोक्ष कल्याणक महोत्सव माघ बदी चौदस दिनांक 08 फरवरी 2024 वार गुरुवार को धूमधाम से मनाया जायेगा।प्रबंध समिति अध्यक्ष महावीर ठोल्या व महामंत्री सुनील बड़जात्या ने बताया कि मोक्ष कल्याणक के पावन अवसर पर व आचार्य विद्यासागर महाराज के स्वास्थ्य लाभ हेतु विशेष भक्तामर विधान का आयोजन किया जाएगा। समाज के विवेक पाटोदी ने बताया कि मोक्ष कल्याणक के अवसर पर सर्वप्रथम झंडारोहण व भक्तामर विधान आयोजित होगा , इसके पश्चात आदिनाथ भगवान को निर्वाण लाडू समर्पित किया जाएगा। कार्यक्रम में आगे श्रीजी को छत्र चढ़ाया जाएगा व महाआरती की जाएगी । इस अवसर पर सीकर व आसपास के क्षेत्रों के धर्मावलंबी सम्मिलित होंगे। विद्यासागर महाराज के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ हेतु सीकर सहित देशभर में हो रहा है विशेष अभिषेक, शांतिधारा व पूजन विधान। सीकर जैन समाज के विवेक पाटोदी ने बताया कि संत शिरोमणि आचार्य विद्यासागर महाराज के स्वस्थ होने की मंगलकामना के साथ सीकर के साथ साथ देश भर के जैन मंदिरों में अभिषेक और शांतिधारा जारी है । जानकारी के अनुसार, आचार्य श्री की तबीयत में सुधार हो रहा है और जल्द ही श्रद्धालु उनके दर्शन कर पाएंगे।

जीवन जीना इतना आसान नहीं है : गणिनी आर्यिका विज्ञाश्री माताजी

गुंसी, निवाई. शाबाश इंडिया। श्री दिगम्बर जैन सहस्त्रकूट विज्ञातीर्थ, गुन्सी (राज) में विराजमान गणिनी आर्यिका विज्ञाश्री माताजी ने श्रद्धालुओं को धर्मोपदेश देते हुए कहा कि - जीवन जीना इतना आसान नहीं है। ज्यादा बोलो तो लोग पागल समझते है, कम बोलो तो घमंडी समझते है और काम की बात करो तो मतलबी समझते है। समय और शब्द दोनों का उपयोग लापरवाही से ना करे क्योंकि ये दोनों ना दोबारा आते हैं ना मौका देते हैं। तारीफ करने वाले शब्दों से ज्यादा, गलतियां निकालने वालों के शब्दों को गंभीरता से लो। उसी में आपके उज्वल जीवन के रहस्य की चाबी छुपी है। साधनारत पूज्य गुरुमाँ ने आज सर्वोत्कृष्ट तप 'अनशन' को धारण कर अहिंसा महाव्रत का पालन कर रही है। विज्ञातीर्थ क्षेत्र पर चल रही । दीक्षा दिवस महोत्सव संबंधित गतिविधियों पर चर्चा हेतु पं. विमल जी बनेठा एवं समिति के कोषाध्यक्ष प्रकाशचंद छाबडा व महिला परिषद की अन्तरिम अध्यक्ष सुमित्रा छाबडा जयपुर ने सहभागिता दिखाई एवं गुरुमां का मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया।

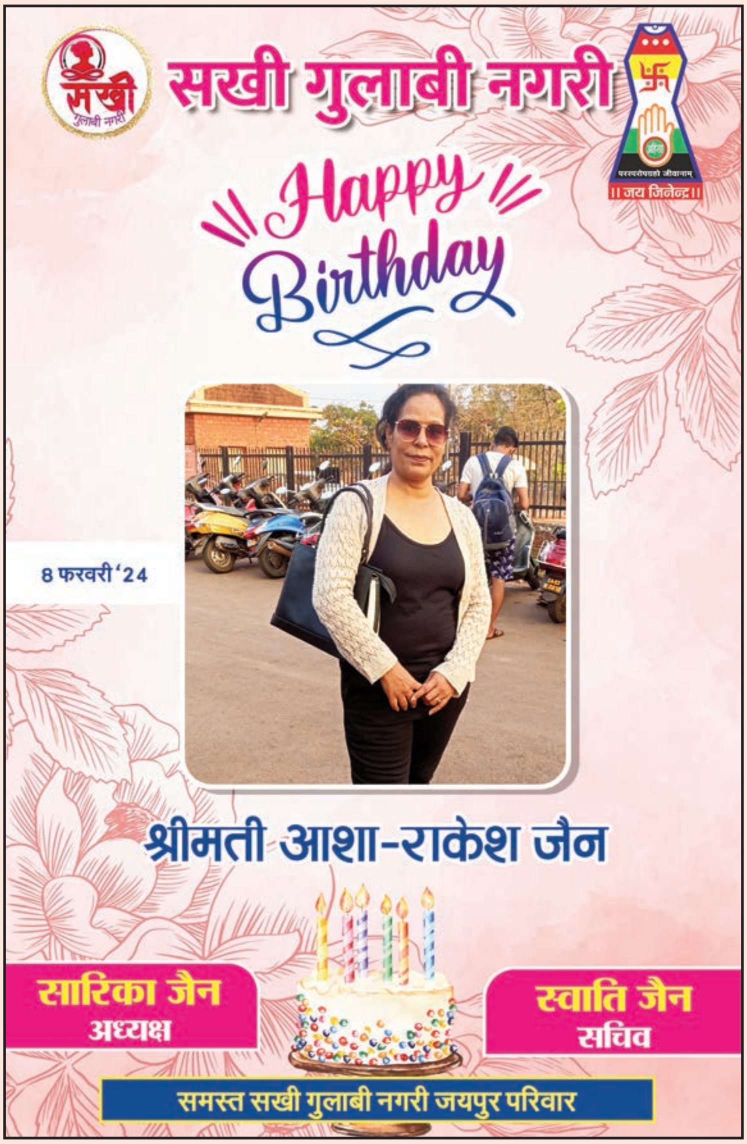

इंसान की इच्छाएँ ही भटकाती और आत्मा को संसार में अटकाती है: उपप्रवर्तिनी दिव्यप्रभाश्रीजी

सुनिल चपलोत. शाबाश इंडिया

भीलवाड़ा। इच्छाएँ ही मनुष्य को भटकाती और आत्मा को संसार में अटकाती है सोमवार अहिंसा भवन शास्त्रीनगर में उप प्रवर्तिनी महासती दिव्यप्रभा ने आयोजित धर्मसभा में श्रध्दांलूओ को सम्बोधित करते हुए कहा कि मनुष्य की महत्वाकांक्षा इतनी है कि वो जिंदगी भर तक उसे पूरा करे तब भी वो अपनी इच्छाओं को पूरा नहीं कर सकता है क्योंकि संसार में इच्छाओं का कोई अन्त नहीं है, एक इच्छा पूरी करेगा तो दूसरी इच्छा जागृत हो जाएगी। इच्छाओं पर नियंत्रण रखने वाला व्यक्ति ही संसार से अपनी आत्मा को मुक्ति दिला सकता है इच्छाओं के गुलाम और दास बनने वाला व्यक्ति संसार में दुःख भोगता है और आत्मा को संसार के भटकाव से बाहर नहीं निकाल सकता है।साध्वी निरूपमा ने कहा कि मनुष्य कि जरूरते कम है,लेकिन उसकी इच्छाओ का कोई अनन्त नहीं है।साध्वी आर्याश्री ने भजन के माध्यम से अपने भाव व्यक्त किए थे।श्री संघ के मंत्री दिनेश मेहता ने जानकारी देते हुए बताया संघ के मुख्य मार्ग दर्शक अशोक पोखरना अध्यक्ष लक्ष्मण सिंह बाबेल विनोद बोहरा,सरदार सिंह कावड़िया जसवंत सिंह डागलिया आदि पदाधिकारियों और श्रध्दालुओं ने धर्मसभा से पूर्व साध्वी मंडल के अहिंसा भवन पधारने पर अगवानी करते हुए अभिनन्दन किया गया ।

दसवें तीर्थंकर शीतल नाथ भगवान का मनाया जन्म एवं तप कल्याणक महोत्सव हर्षोल्लास पूर्वक

फागी. शाबाश इंडिया। कस्बे सहित परिक्षेत्र के चकवाड़ा, चौरू, नारेडा मंडावरी, मेंहन्दवास, निमेडा, लसाडिया, लदाना दिगम्बर जैन मंदिरों सहित फागी कस्बे के आदिनाथ मंदिर, पार्श्वनाथ मंदिर, मुनि सुव्रतनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, त्रिमूर्ति मंदिर, पार्श्वनाथ चैत्यालय, चंद्र प्रभु नसियां तथा चंद्रपुरी मंदिर सहित सभी जिनालयों में जैन धर्म के दसवें तीर्थंकर शीतल नाथ भगवान का जन्म व तप कल्याणक महोत्सव हर्षोउल्लास के साथ मनाया गया, जैन महासभा के प्रतिनिधि राजाबाबू गोधा ने अवगत कराया कि कार्यक्रम में आज आर्यिका श्रुतमति माताजी आर्यिका सुबोध मति माताजी स संघ के पावन सानिध्य में पार्श्वनाथ चैत्यालय में प्रातः अभिषेक, शांतिनाथ, अष्टद्रव्यों से पूजा अर्चना करने के बाद शीतलनाथ भगवान का जन्म एवं तप कल्याणक महोत्सव का सामूहिक रूप से जयकारों के साथ अर्घ्य चढ़ाकर सुख समृद्धि और शांति की कामना की गई। कार्यक्रम में सभी पूर्वाचार्यों के अर्घ्य अर्पित कर आचार्य विद्यासागर जी महाराज के स्वास्थ्य लाभ की कामना करते हुए सामूहिक रूप से जयकारों के साथ अर्घ्य चढ़ाते हुए दीघार्यु होने की कामना की गई, मंदिर समिति के अध्यक्ष महावीर झंडा एवं मंत्री कमलेश कुमार चौधरी ने बताया कि गुरुवार,8 फरवरी को जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव का मोक्ष कल्याणक महोत्सव मनाया जाएगा,शुक्रवार ,9 फरवरी को जैन धर्म के ग्यारहवें तीर्थंकर भगवान श्रेयांसनाथ का ज्ञान कल्याणक महोत्सव मनाया जाएगा, तथा फागी त्रिमूर्ति जैन मंदिर समिति के कमलेश जैन मंडावरा, पवन कागला, तथा मुकेश कलवाड़ा ने संयुक्त रूप से बताया कि कार्यक्रम की पूर्व संध्या पर त्रिमूर्ति जैन मंदिर में आज आर्यिका श्रुतमति माताजी, आर्यिका सुबोध मति माताजी ससंघ के पावन सानिध्य में भक्तामर आराधना की गई और 48 दीपकों से महाआरती करने के बाद प्रश्न मंच का आयोजन किया गया, समाज सेवी रामस्वरूप जैन मंडावरा एवं नोरतमल कठमाणा ने बताया कि कार्यक्रम में 8 फरवरी को त्रिमूर्ति जैन मंदिर में प्रातः 7 बजे महाशांतिधारा , पंचामृत अभिषेक के बाद जैन धर्म के प्रथम तीर्थकर आदिनाथ भगवान के समक्ष सामूहिक रूप से जयकारों के साथ निर्वाण लाडू चढ़ाया जायेगा तथा 8 बजे से महावीर कुमार -राहुल कुमार जैन नला परिवार के सौजन्य से सकल जैन समाज के सहयोग से आदिनाथ समोशरण विधान की पूजा अर्चना की जायेगी।

अन्तर्मना आचार्य प्रसन्न सागर जी के प्रवचन से...

जिन पर हम अन्ध विश्वास करते हैं...
अक्सर वही लोग हमारी आँखें खोलते हैं...!

कभी आपने ध्यान दिया- ? महिलाएँ रोती है तो मुंह पर हाथ रखती है और पुरूष रोते हैं तो आँखों पर हाथ रखते हैं। पता है क्यों- ? चिन्तन की गहराई में जाने के बाद पता चला कि औरतें ज्यादा गुनाह अपनी जुबान से करती है और पुरूष निगाहों से। इसलिए हमारे आचार्यों ने कहा - आँख और जुबान पर जिसने कन्ट्रोल कर लिया, उसने जीते जी इस जीवन को स्वर्ग बना लिया। क्योंकि सभी पापों की जड़ आँख है। कहते हैं ना - अखियों से गोली मारे.. और वाद विवाद की जड़ जुबान। डॉक्टर और वकील का जीवन आपकी जुबान से चल रहा है। भगवान महावीर कहते हैं - जैसा कर्म करोगे, फल भी वैसा ही भोगना पड़ेगा। आज जो तुम कर्मों के बीज का बीजारोपण कर रहे हो, कल जब वह वृक्ष बनेगा, तो फल तो लगेंगे। हाँ, इतना अन्तर जरूर हो सकता है कि टमाटर का पौधा लगाओगे तो शायद दो-चार महीने में फल आ जायेगा और आम या नारियल का वृक्ष लगाओगे तो छह-आठ वर्ष फल का इन्तजार करना पड़ेगा। पर फल तो मिलेगा। इस भ्रम में मत रहना कि गंगा में नहाने से और भगवान का अभिषेक करने से हम पापों से मुक्त हो जायेंगे। गंगा जैसी पवित्रता आचरण में प्रकट होगी तो गंगा-स्नान से और जिनाभिषेक से मुक्ति दिलाने में समर्थ होगा। क्योंकि अपने कर्मों का फल तो स्वयं को ही भोगना पड़ेगा। फिर किसी को दोष मत देना। आँख खुली तो सपना गया, और आँख मुंदी तो दफना गया...!!!। **-नरेंद्र अजमेरा पियुष कासलीवाल औरंगाबाद**

आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर 'शाबाश इंडिया' आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादक: राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर
शाबाश इंडिया
shabaasindia@gmail.com
weeklyshabaas@gmail.com

अयोध्या तीर्थ प्रभावना रथ शोभायात्रा बैंड-बाजा के साथ निकाली

निवाई जैन समाज ने की अगुवानी

निवाई। सकल दिगंबर जैन समाज के तत्वावधान में अयोध्या जैन तीर्थ प्रभावना रथ बुधवार को निवाई आगमन पर भव्य स्वागत किया गया इसमें जैन समाज के श्रद्धालुओं द्वारा नसिया जैन मंदिर पर सभा आयोजित की गई। जिसमें सैकड़ो श्रद्धालुओं ने भाग लिया। जैन समाज के प्रवक्ता विमल जौला व राकेश संगी ने बताया कि भगवान ऋषभदेव जन्मभूमि अयोध्या तीर्थ प्रभावना रथ निवाई के नसियां जैन मंदिर पहुंचने पर समाज बंधुओ ने प्रभावना रथ की पूजा अर्चना की। प्रभावना रथ कार्यक्रम में सोधर्म इंद्र महावीर प्रसाद हितेश कुमार मयंक कुमार छाबड़ा एवं धनपति कुबेर ताराचंद रितिक कुमार गोयल ने एवं आदिनाथ भगवान की महाआरती महावीर प्रसाद विक्रम कुमार पराना ने की। इसके बाद मुख्य रूप से भगवान ऋषभदेव का पालना विष्णु कुमार राहुल कुमार बोहरा ने पालना झुलाकर पूजा अर्चना की। सुनील भानजा व त्रिलोक रजवास ने बताया कि अयोध्या तीर्थ प्रभावना रथ में पांच प्रतिमाएं विराजमान थी। सुसज्जित रथ के चारों ओर स्वर्णमयी कलात्मक जिन प्रतिमाएं अलंकृत थी। इसके बाद प्रभावना तीर्थ रथ नसियां जैन मंदिर से गाजा बाजा के साथ रवाना होकर टोंक रोड अहिंसा सर्किल भगवान महावीर मार्ग होता हुआ अग्रवाल जैन मंदिर पहुंचा जहां जैन श्रद्धालुओं ने भव्य अगवानी की इसके बाद प्रतिष्ठाचार्य अकलंक जैन शास्त्री अयोध्या ने धर्म सभा को संबोधित करते हुए कहा कि भगवान आदिनाथ का जन्म करोड़ों वर्ष पूर्व अयोध्या नगरी में हुआ था जिसमें भरत बाहुबली सहित 101 पुत्रों पुत्रियों का जन्म भी अयोध्या में हुआ था इस कारण अयोध्या में ऋषभदेव तीर्थंकर का इतिहास एवं मंदिर निर्माण को विशाल स्तर पर करवाया जा रहा है। अयोध्या तीर्थ प्रभावना रथ सम्पूर्ण राज्य में संयोजक उदयभान जैन, दिलीप जैन जयपुर एवं प्रतिष्ठाचार्य अकलंक जैन शास्त्री अयोध्या प्रभावना एवं प्रचार प्रसार करते हुए व्यवस्थाओं में जुटे हुए हैं। इसी को लेकर प्रभावना तीर्थ रथ सम्पूर्ण भारत में भ्रमण कर प्रभावना कर रहा है। इस अवसर पर जैन समाज कार्याध्यक्ष नेमीचंद गंगवाल मंत्री महावीर प्रसाद पराणा बड़ा जैन मंदिर अध्यक्ष विनोद जैन मंत्री महेन्द्र चंवरिया मनोज पाटनी पवन बोहरा त्रिलोक रजवास राकेश संगी सुनील भाणजा राजेन्द्र सेदरिया सुनील चेनपुरा कमल सोगानी महेन्द्र सुनारा नेहरू बड़ागांव पदमचंद टोंग्या शशी सोगानी सुमन जैन यामिनी छाबड़ा मेना पराणा प्रियंका पराणा वर्षा छाबड़ा सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित थे।

जैन मंदिरों में गूंजे जयकारे

जैन धर्मावलंबियों ने मनाया दसवें तीर्थंकर भगवान शीतल नाथ का जन्म व तप कल्याणक महोत्सव

जयपुर. शाबाश इंडिया

जैन धर्मावलंबियों द्वारा जैन धर्म के दसवें तीर्थंकर भगवान शीतलनाथ का जन्म व तप कल्याणक महोत्सव बुधवार,7 फरवरी को भक्ति भाव से मनाया गया इस मौके पर शहर के दिगम्बर जैन मंदिरों में पूजा अर्चना के विशेष आयोजन किए गए। गुरुवार को भगवान आदिनाथ का मोक्ष कल्याणक दिवस मनाया जाएगा। राजस्थान जैन युवा महासभा के प्रदेश महामंत्री विनोद जैन कोटखावदा ने बताया कि प्रातः मंदिरों में श्री जी के अभिषेक के पश्चात जयकारों के बीच मंत्रोच्चार से विश्व में सुख शांति और समृद्धि की कामना करते हुए शांतिधारा की गई। तत्पश्चात अष्ट द्रव्य से पूजा अर्चना के दौरान भगवान शीतलनाथ का जन्म व तप कल्याणक श्लोक का सामूहिक रूप से उच्चारण कर जयकारों के साथ अर्घ्य चढाया गया। महाआरती के साथ समापन हुआ। घी वालों का रास्ता स्थित दिगम्बर जैन मंदिर फागी में मूलनायक भगवान शीतल नाथ का जन्म व तप कल्याणक महोत्सव धूमधाम से मनाया गया। इस मौके पर भगवान के दुग्धाभिषेक के बाद, शांतिधारा की गई। तत्पश्चात मण्डल विधान पर पूजा अर्चना की गई। इस मौके पर समाजसेवी विमल गोदिका, सुनील बाकलीवाल, पदम गोदिका, संजय बाकलीवाल एवं सोभाग मल जैन सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु शामिल हुए। श्री जैन के मुताबिक भट्टारक जी की नसियां के दिगंबर जैन मंदिर में आचार्य चैत्य सागर महाराज के सानिध्य में विशेष आयोजन किए गए। सांगानेर के संघीजी दिगम्बर जैन मंदिर, श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र चूलगिरी ,जग्गा की बावड़ी, तारों की कूंट पर सूर्य नगर के श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, शांतिनाथ जी की खोह सहित अन्य दिगम्बर जैन मंदिरों में भगवान शीतलनाथ का जन्म व तप कल्याणक दिवस मनाया गया । राजस्थान जैन युवा महासभा के प्रदेश महामंत्री विनोद जैन कोटखावदा ने बताया कि गुरुवार,8 फरवरी को जैन धर्म के प्रवर्तक एवं प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव का मोक्ष कल्याणक महोत्सव मनाया जाएगा। इस मौके पर शहर के दिगम्बर जैन मंदिरों में प्रातः पूजा अर्चना के बाद मंत्रोच्चार के साथ निर्वाण लाडू चढाया जाएगा। रात्रि में महाआरती के बाद भक्तामर स्तोत्र अनुष्ठान के पाठ किए जाएंगे। जैन के मुताबिक जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ के मोक्ष कल्याणक दिवस पर शहर के 250 से अधिक मंदिरों में पूजा अर्चना एवं निर्वाण लाडू चढ़ाने के विशेष आयोजन होंगे।

संघीजी मन्दिर सांगानेर में 64 रजत चंवरों से सुषोभित भव्य रजत चंदौवां का हुआ अनावरण

जयपुर. शाबाश इंडिया

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र मन्दिर संघीजी सांगानेर में 64 रजत चंवरों से सुशोभित भव्य रजत चंदौवां का अनावरण हुआ । प्रातः स्मरणीय आचार्य भगवंत संत शिरोमणी आचार्यश्री 108 विद्यासागरजी महाराज के परम शिष्य, निर्यापक श्रमण, सांगानेर तीर्थ जीर्णोद्धारक, मुनिपुंगव श्री 108 सुधासागरजी महाराज के पावन आशीर्वाद एवं प्रेरणा से सांगानेर वाले बाबा महाअतिशयकारी श्री आदिनाथ भगवान की मूलवेदी में एवं मूल गर्भगृह में तीनों प्रतिमाओं के उपर रजत चंदौवा का अनावरण दिगम्बर जैन श्रेष्ठी परम दानवीर विनय-आभा जैन, विवेक-मैत्री जैन, अविष्कार जैन, आयुषि-संभव जैन परिवार अहमदाबाद गुजरात के करकमलों से बुधवार दिनांक 07 फरवरी 2024 प्रातः 9.15 बजे किया गया इससे पूर्व उक्त अनावरण कर्ता परिवार ने प्रातः 7.30 बजे देवाधिदेव 1008 श्री सांगानेर वाले बाबा आदिनाथ भगवान का अभिषेक एवं शान्तिधारा का भी पुण्यार्जन प्राप्त किया। कमेटी के मंत्री नरेन्द्र पाण्ड्या ने बताया कि इस पावन अवसर पर एस.के.जैन दिल्ली, प्रमोद पहाडिया, उत्तमचन्द पाटनी, शैलेष गोधा समाचार जगत, विनोद छाबडा, मंदिर कमेटी के अध्यक्ष महावीर बज, नरेंद्र बज आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। प्रबन्ध कारिणी कमेटी ने अनावरण कर्ता परिवार एवं बाहर से पधारे हुये सभी अतिथियों का स्वागत सम्मान करते हुये आभार व्यक्त किया।

मंडाभीमसिंह में चल रहे धार्मिक आयोजन में उमड़े श्रद्धालु

आर्यिका नंदीश्वरमति माताजी के सानिध्य में आयोजित हो रहा है धार्मिक आयोजन

अर्पित जैन. शाबाश इंडिया

भैसलाना। कस्बे के निकटवर्ती ग्राम मंडाभीमसिंह में चल रहे 200 वॉ स्थापना दिवस, कलशारोहण,ध्वजारोहण,श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान एवं विश्वशांति महायज्ञ का आयोजन 3 फरवरी से 8 फरवरी तक आयोजित हो रहा है। मंगलवार को जिनेंद्र अभिषेक,शांतिधारा,नित्य नियम पूजन, चित्र अनावरण,दीप प्रज्ज्वलन,आर्यिका माताजी के पाद-प्रक्षालन,शास्त्र भेंट,श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान पूजन, माताजी की आहारचर्या, महाआरती, मंगलाचरण,भक्ति संध्या का आयोजन हुआ। इंद्र-इंद्राणी श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान में भक्ति में झूम उठे ।शाम को महाआरती में पुण्यार्जक परिवार अपने घर से नाचते गाते हुए पंडाल में पहुंचे जहां भक्तिमय महाआरती की गई ।भजनसम्राट केशव के भजनों से भक्त भावविभोर होकर भक्ति में झूम उठे।

श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र शांतिनाथ जी की खोह में भगवान आदिनाथ के मोक्ष कल्याणक दिवस की पूर्व संध्या पर बुधवार को सायंकाल 48 दीपकों से भक्तामर स्तोत्र अनुष्ठान किया गया।